International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 01-03-2023, Accepted: 16-03-2023, Published: 31-03-2023
Volume 9, Issue 2, 2023, Page No. 35-38

संयुक्त परिवार विघटनः आश्रयहीन वृद्ध

नीलिमा[1], डॉ. बृजलता शर्मा[2]
[1] शोद्यार्थी, महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्याल, उत्तराखंड, भारत
[2] प्रोफेसर, महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय, उत्तराखंड, भारत

सारांश
संयुक्त पारिवारिक अवधारणा का विघटन पारंपरिक संरचनाओं के टूटने को परिदर्शित करता है। संयुक्त परिवारिक अवस्था अर्थात अनेक विस्तारित रिश्ते पीढ़ी दर पीढ़ी, जिसमें सभी परिवारिक सदस्य एक साथ रहते हुए संसाधनों, जिम्मेदारियों और रहने की जगह को आपस में साझा करते हैं। वर्तमान में हमारे समक्ष एक विचित्र पर अत्यधिक खतरनाक समस्या समाज में पैर पसार रही है, जिसके कुप्रभाव से कोई नहीं बच सकता है; चाहे आप कितने ही साधन संपन्न क्यों ना हो ? वृद्धावस्था में वयोवृद्धों व्यक्तियों की देखभाल की सुनिश्चितता। इस समस्या के मूल में संयुक्त परिवारिक अवधारणा का विघटन एक मुख्य कारण है। भारत में सदैव संयुक्त परिवार की अवधारणा को ही प्राथमिकता दी जाती रही हैं।
आज समाज में स्थिति बदल चुकी है। एकाकी जीवन में जीने की शैली अपनाने को सभी में जैसे होड़ सी लगी है। जिसके ऐसे परिवर्तन को किस नजर से देखा जाए? इसके मूल में कई कारण, निवारण, प्रभाव, कुप्रभाव एवं दुष्परिणाम भी समाज में देखने को मिल रहें हैं। अतः इस विषय पर शोध पत्र के माध्यम से समझने और जानने योग्य कुछ तथ्यों को उजागर किया जा रहा है।

मूल शब्दः भयावहता, वृद्ध आश्रम, संयुक्त, एकाकी, परिवार, सेवानिवृत्ति, अंतर्निहित, निष्कासित, विघटन, नकारात्मक, सकारात्मक

संयुक्त परिवारों का दिन–प्रतिदिन एकाकी परिवार में बदलता स्वरूप कई कारणों से हैं, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं

बदलते सामाजिक मानदंड
व्यक्तिवादी सोच जैसे–जैसे समाज में अपने पैर पसार रही है,लोग अपने परिवार की आवश्यकताओं और इच्छाओं को ही केवल मुख्य रूप से प्राथमिकता देने लगे हैं। इससे संयुक्त परिवारों में निरंतर गिरावट आ रही है और मानव मूल्य का क्षरण भी देखने को मिल रहा है।

नगर की ओर प्रवास
परिवारों का ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की तरफ प्रवास करने की सोच व नियत से भी संयुक्त परिवार की संरचना टूटने की कगार पर है। ऐसी सोच–समझ के कारण ही लोग छोटे–छोटे घरों और फ्लैट में रहने के लिए अग्रसर हो रहे हैं।

वित्तीय कारक
आर्थिक दबाव, जैसे गरीबी या नौकरी छूट जाना, पारिवारिक संबंधों को तनाव में डाल देते हैं, संयुक्त परिवार के ढांचे के विघटन का यह मुख्य कारण बन जाता है।

पीढ़ी अन्तराल मतभेद
युवा व्यस्कों का अपने से बड़ों की सोच–समझ से तुलनात्मक भिन्न–भिन्न मूल्य और अपेक्षाओं के कारण भी परिवार के भीतर संघर्ष की स्थिति होने से संयुक्त परिवार से एकाकी परिवार की ओर परिवर्तन देखने को मिलता है।
वैसे संयुक्त परिवारों के विघटन के कई परिणाम समाज में देखने को मिलते हैं,जिनमें से एक दुःखद परिणाम वृद्ध लोगों का अपने ही घर से निष्कासित जीवन की भयावहता का दंश, जो दिन–प्रतिदिन समाज में वृद्धाश्रमों की संख्या में वृद्धि की संभावनाओं को बड़े पैमाने पर भारत में सेंध लगाने में सफल हो चुकी है।
संयुक्त परिवार से बदलाव एकाकी परिवार की तरफ, उसके साथ–साथ ही एक नया ही चलन वर्तमान समाज में बढ़–चढ़कर देखने को मिल रहा है; वर्तमान परिवेश में बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए विदेशों में भेजने वाले अधिकांश माता–पिता भी वृद्धावस्था में (जो अकेले या असमर्थित परिस्थितियों का सामना करने पर वृद्धाश्रमों की शरण लेना एकमात्र विकल्प के रूप में) अपना शेष जीवन बिताने के लिए वृद्धाश्रमों में रहने के लिए मजबूर हो जाते हैं। कई मामलों में तो परिवार के बुजुर्ग सदस्य जो खुद की देखभाल करने में असमर्थ हो जाते हैं, उन्हें वृद्धाश्रम या सेवानिवृत्ति समुदायों में संतान की गलत मानसिकता के कारणवश, उनकी खुद की संतान द्वारा ही वृद्धाश्रम जाने के लिए मजबूर किया जाता है। इससे इन बुजुर्गों में सामाजिक अलगाव मानसिकता और जीवन की गुणवत्ता कम होने के साथ–साथ या लगभग–लगभग समाप्ति की ओर रुख कर चुकी होती है।
सकारात्मक–नकारात्मक दृष्टिकोण से यदि हम वृद्ध आश्रम की परिभाषा करें तो–

- वास्तव में वृद्धाश्रमों का उपयोग सही मायनों में उनके लिए है,जिनके कोई संतान या देखरेख वाला नहीं है। ऐसे निसहाय वृद्ध व्यक्तियों के लिए एक सुरक्षित और सहायक वातावरण प्रदान कर सकते हैं। जो बुजुर्ग व्यक्ति स्वयं स्वतंत्र रूप से जीने में पूर्णतया सक्षम नहीं हैं।
- लेकिन इसका एक नकारात्मक प्रभाव यह भी है कि बहुत से लोग उन्हें अंतिम उपाय के रूप में ही देखते हैं, जबकि वृद्ध लोग अपने परिवार के साथ या अपने घरों में रहना ही पसंद करते हैं। इस तथ्य में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही बातें उजागर हो रही हैं।
- आज वृद्ध आश्रम की बढ़ती संख्या समाज के लिए अत्यंत चिंताजनक महत्त्वपूर्ण समस्याओं में से एक बन चुकी है। अतः संयुक्त परिवार के विघटन के अंतर्निहित कारणों को दूर करने के हर संभव प्रयास किये जाने चाहिए।
- परिवारों को अपने बुजुर्ग सदस्यों की देखभाल में सहायता करने की दिशा में कार्य करने में सहायक कदमों में सरकार द्वारा शिक्षा नीतियों में विशेष रूप से संबंधित विषयों पर प्रोत्साहित किये जाने वाली योजनाओं व पाठ्य–पुस्तकों में सम्मिलित करें, साथ ही कानून बनाने व उनको क्रियान्वित भी करने चाहिए।

वर्तमान संयुक्त परिवार विघटन और भारतीय समाज में परिवार की पारंपरिक व्यवस्था

हमारे भारतीय समाज में सदैव ही संयुक्त परिवारिक संरचना को वरीयता दी जाती रही है। आदर्शयुक्त परंपरागत तरीके को ही हम लंबे समय से देखते–सुनते आ रहे थे, जिसमें कई पीढ़ियाँ एक साथ, सभी पर्याप्त संसाधनों और उत्तरदायित्वों को निभाने को तत्पर तथा एकजुट होकर सफलता पूर्वक जीवन व्यतीत करते हुए,सभी सदस्य एक ही छत के नीचे रहते–रहते सुख सुविधाओं को सांझा किया करते थे।

हालांकि पिछले कुछ दशकों में, एकल परिवारों की ओर अग्रसर होने वाले बदलाव समाज में अधिक प्रसारित होते नजर आ रहे हैं, जिसके चलते संयुक्त परिवार कम हो गए हैं। इस बदलाव के कई कारण हैं, जिनमें शहरीकरण, बदलते सामाजिक मानदंड और आर्थिक कारक के साथ ही बुजुर्ग लोगों की अपने ही घरों में अनदेखी और अभद्र व्यवहारिकता भी समाहित है। अगर इससे संबंधित विषय पर शास्त्रों की बात करें तो प्राचीन भारतीय ग्रंथ तैत्तिरिय उपनिषद का एक श्लोक संयुक्त परिवारों के महत्त्व पर जोर देता हैः

"मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव, अतिथि देवो भव"

अनुवाद

"अपनी माँ को भगवान के रूप में, अपने पिता को भगवान के रूप में, अपने शिक्षक को भगवान के रूप में और अपने अतिथि को भगवान के रूप में मानो।"

उपरोक्त श्लोक में संयुक्त परिवार और आतिथ्य के उन मानव मूल्याधारित महिमा को जोड़ने वाले प्रत्येक पहलू को उजागर करने में सफल प्रयोजन सिद्ध भावनाओं से ओत–प्रोत उमंग और उत्साह भाव को प्रदर्शित होता है। यह भाव भारतीय संस्कृति के केंद्र में प्राचीन कालीन समावेश को भी दर्शाता है। एक संयुक्त परिवार में रहने वाले व्यक्ति इन जीवन मूल्यों को आचरण में बनाए रखने और मजबूत पारिवारिक बंधन बनाए रखने में सक्षम थे।परन्तु जैसे–जैसे समाज बदलावों को ग्रहण करता गया वैसे–वैसे ही युवा पीढ़ी इन पारंपरिक मूल्यों से दूर होती चली गयी। सभी जन अपने परिवार की जरूरतों और इच्छाओं को ही प्राथमिकता देते हुए अपना जीवन यापन करते रहते हैं। (श्रीमद्भगवद्गीता 2 /47) का निम्नलिखित श्लोक व्यक्तियों की इच्छाओं व कर्तव्य के जिस रूप को प्राथमिकता देने के लिए प्रोत्साहित करता है। आओ सीखेंदृ

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"

तात्पर्य

"आपको अपना निर्धारित कर्तव्य करने का अधिकार तो है, लेकिन आप अपने कर्मों के फल के हकदार नहीं हैं।

यह श्लोक व्यक्ति के कर्तव्य पालन के महत्त्व पर बल देता है, भले ही परिणाम अनिश्चित हो परन्तु व्यक्तियों को केवल अपनी इच्छाओं का पालन करने के अतिरिक्त अपने परिवार और समाज के प्रति भी अपनी जिम्मेदारियों और दायित्वों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए भी सदैव तैयार रहना चाहिए। जैसे–जैसे समाज विकसित हुआ है, व्यक्तिगत लाभ के अवसर पर अधिक ध्यान देने की समझ भी बहुत कुछ हद तक बढ़ चढ़कर देखने को मिल रही है। जिसके कारण मनुष्य इन पारंपरिक कर्तव्यनिष्ठ कर्मों (जो कर्म मानव मूल्यों से ओतप्रोत, नैतिकता पूर्ण, मानवीय संवेदनायुक्त होते हैं) और शाश्वत सत्य से दूर होते चले जा रहे हैं।

संयुक्त परिवार विघटन एक समस्या और वृद्धाश्रम

संयुक्त परिवारों के विघटन का शिशुओं के पालन–पोषण के साथ–साथ परिवार के बुजुर्ग सदस्यों की वर्तमान और भावी पीढ़ियों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। आज जब परिवार एक साथ नहीं रह रहे हैं, तो स्वस्थ बाल विकास के लिए आवश्यक सहायता और मार्गदर्शन प्रदान कराना अति कठिनाईपूर्ण होता जा रहा है। ठीक इसी तरह कुछ परिवार में बुजुर्ग सदस्यों को वृद्धाश्रम में जाने के लिए मजबूर भी किया जाता है, तो वे सामाजिक अलगाव और जीवन की गुणवत्ता में कमी का अनुभव करते हैं। इस समस्या को सुलझाने हेतु कुछ आयाम ऐसे हैं जिन्हें केवल हम आपसी समझ–बूझ के आधार पर ही हल कर सकते हैं।

संयुक्त परिवारों के विघटन को दूर करने और स्वस्थ परिवारों की संरचनाओं का समर्थन करने हेतु आवश्यक कदमः

पारिवारिक स्तर पर मूल्यों और परंपराओं में वृद्धि

पारंपरिक मूल्यों के महत्त्व पर जोर देकर, युवा पीढ़ी अपने परिवार के सदस्यों के साथ अपने संबंधों को सुधारने में प्राथमिकता दे सकती है।

बहु–पीढ़ीगत व्यवस्था को प्रोत्साहन देना

ऐसे कार्यक्रम जो बहु–पीढ़ीगत व्यवस्था को बढ़ावा देते हैं, जैसे कि साझा आवास या अंतर–पीढ़ीगत समुदाय, परिवारों के लिए एक सहायक वातावरण प्रदान कर सकते हैं।

पर्यवेक्षण सहायता संस्थानों में वृद्धि

सरकार और सामुदायिक कार्यक्रम देखभाल करने वालों के लिए सहायता प्रदान कर सकते हैं, जिससे वे अपने काम और पारिवारिक ज़िम्मेदारियों में उचित संतुलन बनाने में सहायक सिद्ध हो।

पारिवारिक स्तर पर चर्चा व संवाद शैली को प्रोत्साहित करना

परिवार के सदस्यों के बीच खुले और ईमानदार संचार को प्रोत्साहित करने से संघर्षों और गलतफहमियों को रोकने में मदद मिल सकती है जिससे पारिवारिक रिश्ते टूटने से बचाने में मदद मिलती है।

वृद्धावस्था में उपयोगी संसाधनों को अपने घर पर ही उपलब्ध कराना

ऐसे संसाधन जो उम्र बढ़ने पर दैनिक जीवन में में मदद करते हैं, जैसे कि घरेलू स्वास्थ्य देखभाल संबंधित छोटी–छोटी मशीनों का उपयोग न अकेले पन को दूर करने में सहायक सिद्ध सेवाएं आदि। जिससे परिवार के बुजुर्ग सदस्यों को वृद्धाश्रम में जाने के बजाय अपने घरों में रहने में अधिक आसानी होगी।

यह तो कटु सत्य है कि संयुक्त परिवारों का विघटन एक जटिल समस्या है जिसे एक ही समाधान से हल नहीं किया जा सकता है। इसके लिए एक बहुमुखी दृष्टिकोण को अपनाने की आवश्यकता होगी। जिसमें स्वस्थ परिवारिक संरचनाओं का समर्थन करने के लिए एक साथ काम करने वाली सरकार, समुदाय और परिवार सभी का सम्मिलित होना अति आवश्यक है। उपरोक्त सभी सुझावों को भली–भांति समाज में प्रसारित करके हम एक ऐसा समाज बनाने में कामयाब हो सकते हैं जिसमें परिवार की महिमा को महत्त्व देते हुए,स्वस्थ पारिवारिक संबंधों का समर्थन भी हासिल करने में सफल प्रयोग साबित होगा।

संयुक्त परिवारिक अवधारणा के लाभ

सामाजिक सहभागिता

संयुक्त परिवार वास्तव में परिवार के सदस्यों के लिए एक अंतर्निहित सामाजिक समर्थित स्त्रोतों को प्रदान करते हैं ; जिसमें अकेलेपन और अलगाव की भावनाओं को कम करने में सहायक और दूसरों से अपनेपन और जुड़ाव की भावना की झलक हमें अपने इर्द–गिर्द देखने को मिलती है।

छोटे बालकों व आवासीय सुरक्षा हेतु आपसी समन्वय

संयुक्त परिवारों में, भोजन, आवास और बच्चों की देखभाल जैसे विषयों को परिवार के सदस्यों के बीच ही साझा किया जा सकता है, जिससे आय करने वाले व्यक्तियों पर वित्तीय बोझ कम पड़ता है; इससे संबन्धित अर्थात बाहरी संसाधनों पर खर्च होने वाली राशि का औचित्यपूर्ण उपयोग अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु किया जा सकता है।

बुजुर्गों की देखभाल

संयुक्त परिवारों में बुजुर्ग सदस्यों के लिए एक प्राकृतिक सहायता प्रणाली प्रदान करने की भावना को विकसित करने में वर्तमान माता–पिता की अहम भूमिका रहती है। वर्तमान समय में माता–पिता अपने परिवार में बुढ़े सदस्यों की देखभाल भलि–भांति करते हैं तो उनके द्वारा किए गए कार्यों को देखने मात्र से ही आगामी युवा पीढ़ी के आचरण–व्यवहार में बुजुर्ग सदस्यों की देखभाल करने की इच्छा शक्ति स्वतः ही समावेश होती रहेगी। यह एक ऐसी वास्तविक स्थिति है जिसमें उम्र बढ़ने के साथ–साथ देखभाल और सहायता की आवश्यकता मनुष्य जीवन में चलने वाली एक सतत् प्रक्रियाओं में से एक है।

सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण

संयुक्त परिवार सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं को बनाए रखने में मदद कर सकते हैं, क्योंकि पुरानी पीढ़ियां अपने ज्ञान और अनुभवों को परिवार के आगामी युवा व छोटे सदस्यों तक पहुंचाती हैं।

भावनात्मक जुड़ाव

संयुक्त परिवार वास्तव में पारिवारिक सदस्यों के बीच आंतरिक स्तरीय भावनात्मक बंधन को बढ़ावा देने में मदद कर सकते हैं, जिससे समाज में अधिक खुशियां और लोककल्याणकारी वातावरण का विकास संभव हो सकता है।

भारत में, संयुक्त परिवार की अवधारणा की जड़ें हिंदू संस्कृति और परंपराओं में प्राचीन काल से ही गहराई में समाहित हैं। इस विषय की गंभीरता को वेदों के मूल्यों और शिक्षाओं में भी सदा से ही पढ़ाया–लिखाया जाता रहा है। वेद, उपनिषदों में वास्तव में परिवार, समुदाय और सामाजिक समर्थन के महत्त्व पर बल दिया गया है ; साथ ही इस विचार को भी बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है कि व्यक्तियों को अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं से ऊपर उठकर, अपने परिवारों और समुदायों के प्रति अपने दायित्वों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

किसी भी राष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने में प्रत्येक व्यक्ति द्वारा सहायक सिद्धि अंकित कराने हेतु समाज,समुदाय और परिवार को ही प्राथमिकता देते हुए अपने व्यक्तिगत जीवन जीने की कला को सारगर्भित व प्रभावकारी बनाने का अभ्यास करना चाहिए।कुछ विशिष्ट मानवीय मूल्य जिन पर वेदों में जोर दिया गया है और जो संयुक्त परिवार की अवधारणा के लिए प्रासंगिक सिद्ध हैं, उनमें शामिल हैं:

धर्म

धर्म की अवधारणा परिवार और समुदाय के प्रति दायित्वों सहित अपने नैतिक और सामाजिक दायित्वों को पूरा करने के महत्त्व पर बल देती है।

सेवा

सेवा एक निस्वार्थ सेवा को संदर्भित करती है और दूसरों की मदद करने व समाज की अधिक भलाई में योगदान देने के महत्त्व पर भी जोर देती है।

"अतिथि देवो भवः"

यह वाक्यांश, जिसका अर्थ है "अतिथि भगवान है"। आतिथ्य और दूसरों के प्रति उदारता के महत्त्व पर जोर देता है, जो संयुक्त परिवार की अवधारणा का एक महत्त्वपूर्ण घटक है।

यह तो स्पष्ट है कि संयुक्त परिवार की अवधारणा भारतीय संस्कृति और परंपरा का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। दुनिया भर के परिवारों और समुदायों के लिए इसके कई लाभ हैं। पारिवारिक मूल्यों और सामाजिक समर्थन को प्राथमिकता देकर, हम एक से अधिक लोगों से जुड़े हुए, सहायक और देखभाल करने वाले समाज का निर्माण कर सकते हैं।

संयुक्त परिवारिक विघटन से हानि

संयुक्त परिवार का विघटन और बढ़ती हिंसा प्रकृति

- संयुक्त परिवारों के विघटन और पारिवारिक संबंधों के टूटने का व्यक्तियों और समाज के समग्र रूप के कल्याण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस घटना के संभावित नकारात्मक परिणामों में से एक हिंसा और आक्रामकता में वृद्धि है, खासकर युवा पीढ़ियों के बीच।
- कई समाज सुधारक और विचारकों ने मजबूत पारिवारिक रिश्तों के महत्त्व और परिवार के टूटने से समाज पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव को पहचाना है। उदाहरण के लिए, भारत के सबसे प्रमुख नेताओं में से एक, महात्मा गांधी ने एक स्वस्थ और शांतिपूर्ण समाज के निर्माण में पारिवारिक मूल्यों और सामाजिक समर्थन के महत्त्व पर जोर दिया। उनका मानना था कि परिवारों के टूटने से सामाजिक मूल्यों में भी गिरावट आ जाती है और इस समस्या का समाधान पारिवारिक संबंधों को मजबूत करने और सामाजिक समर्थन को बढ़ावा देने में ही निहितार्थ है।
- विश्व स्तरीय विचार करें तो अमेरिकी नागरिक अधिकार आंदोलन के एक नेता मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने उस भूमिका को मान्यता दी जो पारिवारिक रिश्ते सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देने और शांतिपूर्ण संघर्ष समाधान को बढ़ावा देने में निभा सकते हैं। उनका मानना था कि मजबूत परिवार अधिक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत समाज बनाने में मदद कर सकते हैं और यह कि परिवार का टूटना सामाजिक असमानता और हिंसा में योगदान दे सकता है।
- महान विचारकों का भी मानना है कि एक स्वस्थ और शांतिपूर्ण समाज के निर्माण में पारिवारिक संबंधों के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता है। पारिवारिक मूल्यों को प्राथमिकता देकर और सामाजिक समर्थन को बढ़ावा देकर, हम एक ऐसा समाज बनाने में मदद कर सकते हैं जो करुणा, सहानुभूति और शांतिपूर्ण संघर्ष समाधान को महत्त्व देता है। यह बदले में, हिंसा और आक्रामकता को कम करने और एक सुरक्षित, अधिक स्थिर और अधिक न्यायसंगत दुनिया बनाने में मदद कर सकता है।

संयुक्त परिवारिक विघटन नियंत्रण और भविष्य हेतु दिशानिर्देश

संयुक्त परिवारों के विघटन को नियंत्रित करने के लिए समग्रतावादी रूप से व्यक्तियों और समाज दोनों के द्वारा ठोस प्रयास करने की आवश्यकता होती है। वर्तमान समय में और भविष्य के लिए संयुक्त परिवार प्रणाली को बढ़ावा देने के सर्वोत्तम तरीकों के लिए यहाँ कुछ दिशानिर्देश :

पारिवारिक मूल्यों को प्राथमिकता

हम अपने व्यक्तिगत जीवन और समाज में पारिवारिक मूल्यों को प्राथमिकता देते हुए, मानव मूल्यों की उपयोगिता सिद्ध करने के प्रयास पथ पर क्रियान्वित करने वाले आचार–विचार, रहन–सहन, खान–पान आदि अनेक प्रकार की उचित व्यवस्थाओं में घर के

बड़े सदस्यों को सम्मानित करने में सदैव निमित्त और अग्रसर होने वाले कार्यक्रमों को प्राथमिकता देने वाली नीतियों को अपने जीवन में अपना सकते हैं। इस प्रक्रिया में पारिवारिक रिश्तों के महत्त्व को पहचानना और उन्हें मजबूत करनेवाले विचार को भविष्य में आने वाली पीढ़ी को प्रेरणा देने का प्रयास स्वचालित रूप से क्रियान्वित होने लगेगा।

सामाजिक समर्थन भावना

हम लोगों को एक दूसरे की मदद करने के लिए प्रोत्साहित करके और सामाजिक समर्थन को बढ़ावा देने वाले समुदायों का निर्माण करके सामाजिक समर्थन के महत्त्व को उद्घाटित करने वाले आचार–विचार को बढ़ावा दे सकते हैं, इस प्रोत्साहन भावना को परिवारों के आपसी संबंधों में समान रूप से लागू किया जाना चाहिए।

वित्त संबंधी चुनौती

अक्सर आर्थिक कारकों की परिवार के टूटने में महत्त्वपूर्ण भूमिका होती हैं। हम शिक्षा, रोजगार के अवसर और परिवारों को समर्थन देने वाले सामाजिक कल्याणार्थ कार्यक्रमों तक व्यक्तिगत चेतना योगदान को प्राथमिकता प्रदान करके आर्थिक चुनौतियों के समाधान हेतु भी काम कर सकते हैं।

युवा पीढ़ी और रिश्ते–नातों का महत्त्व

युवा पीढ़ी को पारिवारिक रिश्तों के महत्त्व और संयुक्त परिवारों के मूल्य के बारे में शिक्षित करना वास्तव में यह संयुक्त परिवार प्रणाली को बढ़ावा देने का एक सारगर्भित तरीका है।

कानूनी सहयोग

संयुक्त परिवारिक अवधारणा को बढ़ाने में कानूनी सहयोगिता स्वरूप जैसे विरासत और संपत्ति कानून आदि में संयुक्त परिवार प्रणाली को ही समर्थन दिया जाता रहा है, अतः कानून की सहभागिता सुनिश्चित करने में उपरोक्त नियमों द्वारा भविष्य में इस प्रणाली को बढ़ावा देने और बनाए रखने में मददगार साबित होगा।

सांस्कृतिक विविधता

संयुक्त परिवार दुनिया भर में कई संस्कृतियों में पाए जा सकते हैं। हम संयुक्त परिवार प्रणाली को बनाए रखने और बढ़ावा देने के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं के परंपरागत तरीके को खोजने के लिए एक–दूसरे के अनुभवों से सीखें और सिखाने का प्रयोग समाज में इस सकारात्मक सोच को बढ़ावा दे सकते हैं।

बदलते समय के साथ अनुकूलन

जबकि संयुक्त परिवारिक प्रणाली समय के साथ विघटित हुई है, संयुक्त परिवार प्रणाली के मूल में मूल्यों को बनाए रखते हुए बदलते समय के अनुकूल बनाना एक जटिलताओं से भरा काम है परंतु समाज के विकास और आगामी युवा शक्ति संतुलन के अति महत्त्वपूर्ण है।

अतः संयुक्त परिवार प्रणाली को बढ़ावा देने और बनाए रखने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। जिसमें व्यक्तिगत प्रयास और सामाजिक समर्थन भी शामिल होता है। पारिवारिक मूल्यों को प्राथमिकता देकर, सामाजिक व आर्थिक चुनौतियों से निपटने के साथ ही युवा पीढ़ी को शिक्षित करके, कानूनी सहयोगिता व सांस्कृतिक भिन्नता को परिवर्तित समय के साथ–साथ अपनाते हुए, हम अधिक स्थिर, सहायक और देखभाल करने वाले समाज की दिशा में अधिक निपुणता से कार्य कर सकते हैं।

निष्कर्ष

अंत में, संयुक्त परिवारों के विघटन से मानवता के विकास, व्यक्तिगत और समाज पर समग्र रूप से महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है। पारिवारिक रिश्तों के टूटने से सामाजिक समर्थन की कमी, हिंसा और आक्रामकता में वृद्धि और पारंपरिक मूल्यों और सांस्कृतिक विरासत का नुकसान तो होता ही है, पर इसके साथ ही बुजुर्गों का विस्थापन और पारिवारिक जिम्मेदारियों का परित्याग भी हो सकता है। हालाँकि संयुक्त परिवारों के विघटन को नियंत्रित करने के तरीके भी हमारे सामने हैं, जैसे मानव मूल्यों, सामाजिक मूल्यों को बढ़ावा देना, आर्थिक चुनौतियों एकजुट होकर परिवार में ही हल खोजना, युवा पीढ़ी को परिवार की एकता की शिक्षा को उदाहरण में अपने ही बुजुर्गो के जीवन में घटित घटनाओं को प्रमाणित तथ्य सहित बताना, कानूनी सहायता प्रदान करना, सांस्कृतिक विविधता को अपनाना और बदलते समय के साथ तालमेल बिठाना।

इन सर्वोत्तम प्रभावी प्रक्रियाओं से विभिन्न क्षेत्रों में हम संयुक्त परिवार प्रणाली को बढ़ावा दे सकते हैं। जिससे समाज में सुरक्षा, समर्थन और स्थिरता की भावना को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

एक अतिआवश्यक निष्कर्ष जिसे पहचानना अति महत्त्वपूर्ण है कि संयुक्त परिवार प्रणाली अपनी चुनौतियों के बिना भी नहीं है। यह भी सच है कि यह अवधारणा एक ही समय में सभी व्यक्तियों के लिए उपयुक्त नहीं हो सकती है। हालांकि, मजबूत पारिवारिक संबंधों के मूल्य की सराहना करके और संयुक्त परिवार प्रणाली द्वारा प्रदान किए जा सकने वाले लाभों को पहचान कर, हम एक दूसरे के लिए अधिक सहायक, दयालु और देखभाल करने वाला समाज बनाने की दिशा में काम अवश्य कर सकते हैं। जिसके परिणाम सुखद ही होंगे इस अवधारणा से संबंधित उदाहरण समाज में देखने को समय–समय पर मिलते रहते हैं।

संदर्भ सूची

1. वर्ल्ड रिवॉल्यूशन एंड फैमिली पेटर्न्स– डब्लू जी गूडे।
2. व्हाट्'स हैपनिंग टू द अमेरिकन फैमिली?– होपकिंस यूनिवर्सिटी प्रेस 1981
3. संयुक्त परिवार सौभाग्य का द्वारदृश्रीराम शर्मा आचार्य।
4. व्यक्तित्व निर्माण की प्रयोगशाला परिवार संस्थादृ श्री राम शर्मा आचार्य।
5. संगठित परिवार का स्वरूप एवं आदर्शदृश्रीराम शर्मा आचार्य।
6. वृद्धावस्था में सुखी जीवन– सत्येंद्र नाथ राय, प्रभात पेपरबैक्स।
7. हाउसिंग डिसीजंस इन लेटर लाइफ– Roger Clough (Leamy Mary (Les Bright -Comprehensive teÛt book of elderly care– Dr-sukhpal Kaur] Dr-Jugal Kishor] Dr
8. marjeet Singh-
9. Struggle for oldAge home&Aamir Khan] October 2022-